B.A Part-II (Gen/Sub)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
V.S.J College Rajnagar

Lecture XII

सामाजिक समस्याओं के निवारण संबंधी आगम →

1) परस्पारिक संबद्धता उपागम : इसका अर्थ यह है कि एक सामाजिक समस्या अन्य बहुत सी समस्याओं से संबंधित होती है. जिस कारण हमें एक समस्या के विश्लेषण व समाधान के लिए अन्य समस्याओं के विश्लेषण व समाधान के प्रयत्न करने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए अस्पृश्यता समस्या के समाधान के लिए हमें अछूत लोगों के आर्थिक व सामाजिक उत्थान का प्रयत्न करना होगा और साधारण लोगों के उनके प्रति दृष्टिकोणों को भी समाप्त करना होगा, जो शिक्षा आदि द्वारा ही संभव है। फिर पास किए गए कानून के कठोर परिपालन से लोगों में भय पैदा करना होगा कि अस्पृश्यता के ~~मान~~

भारत से उसे कठोर दण्ड मिल सकता है इसके अतिरिक्त विलोप होने को भी समाप्त करने का प्रयत्न करना होगा तथा परम्परागत व्यवस्था में जो अस्पृश्य लोग स्थान अपनाते हैं उनमें आधुनिकीकरण लाना होगा जिससे लोग उनको गंदा, मूर्ख, बुद्धिहीन, अन्य विश्वासी आदि न कहें। दूसरे शब्दों में, अस्पृश्यता के आधार पर उत्पन्न होने निर्धनता, बेकारी, जाति प्रथा आदि समस्याओं को समाप्त करने का प्रयास करना होगा। फिर कुछ सामाजिक समस्याएं सामाजिक नियंत्रण से भी उत्पन्न हो सकती हैं क्योंकि साधारणतया समाजकल्याणकारी लाभकारी कानूनों के कई बार अवांछित परिणाम भी होते हैं। जैसा निषेध अधिनियम के कारण अवैध रूप से शराब बेचना तथा शराब का अवांछित व्यापार जैसे परिणाम उत्पन्न हुए हैं। इसी तरह वेश्यावृत्ति अधिनियम के कारण अवैध यौन संबंध अथवा अवैध वेश्यालय आदि जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो गये। इस आधार पर विभिन्न सामाजिक समस्याओं के पारस्परिक संबंधों का विचार ही सामाजिक समस्याओं के उपचार का आधार हो सकता है।

2020-8-8 21:00